आधार कार्ड की जानकारी लीक होने का खतरा कायम

सरकार ने आधार कार्ड की जानकारी की सुरक्षा के बारे में रेगुलेशन तैयार कर लिया है और उसके दुरुपयोग पर तीन साल की सजा का प्रावधान भी करने जा रही है लेकिन, डेटा चोरी और उसके गलत इस्तेमाल का खतरा टला नहीं है। सबसे बड़ा खतरा बैंक खातों के बारे में है। अगर बैंक खातों से संबंधित आधार कार्ड का डेटा हैक हो गया तो किसी के भी खाते से धन निकासी को रोक पाना कठिन होगा। ऐसे में इसकी जिम्मेदारी बैंक लेगा या भारतीय विशिष्ट पहचान पत्र प्राधिकरण (यूआईडीएआई) यह स्पष्ट नहीं है। संभव है डेटा चोरी होने का मुकदमा दायर भी हो जाए लेकिन, असली सवाल यह है कि खातों से चोरी गए धन की भरपाई कौन करेगा? हाल में एक्सिस बैंक से आधार का बायोमेट्रिक डेटा चोरी हो गया। इसके बाद प्राधिकरण ने एक्सिस बैंक के खातों के आधार पर लेन-देन बंद कर दिया था। यह एक नमूना है, जिसमें एहतियाती कदम उठा लिए गए लेकिन, जब आधार नंबर की संख्या 131 करोड़ तक पहुंच जाएगी और केंद्र व राज्य सरकार की सभी योजनाओं को इससे जोड़ दिया जाएगा तब डेटा सुरक्षा की रोजाना की चुनौती बड़ी हो जाएगी। चुनौती यह भी होगी कि जिन लोगों के आधार नंबर जारी नहीं हुए हैं उन्हें कैसे सरकारी योजनाओं की सुविधा मुहैया कराई जाए और जिनकी सुविधाएं आधार संख्या से जुड़ी हैं उनके डेटा को कैसे गोपनीय रखा जाए। आधार कार्ड का सारा कमाल बायोमेट्रिक डेटा यानी उंगलियों के निशानों और आंख की पुतलियों पर आधारित है। कई बार मनुष्य के काम और बीमारी के कारण उसकी अंगुलियों की छाप और पुतलियों की संरचना में बदलाव होता है व कम्प्यूटर व्यक्ति को पहचानने से इनकार भी कर देता है। हैकिंग और सरकारी एजेंसियों द्वारा लोगों की जासूसी का खतरा व्यक्ति की संपत्ति और निजी स्वतंत्रता के अधिकारों से जुड़ा हुआ है। कानून बन रहा है कि आधार कार्ड से होने वाले कारोबार के डेटा को सात साल सुरक्षित रखा जाए ताकि विवाद होने पर उन्हें उपलब्ध कराया जा सके। सुरक्षा एजेंसियां भी डेटा तक तभी पहुंच सकेंगी जब जिला जज अनुमति दे और राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर डेटा तभी हासिल किया जा सकता है, जब संयुक्त सचिव स्तर का अधिकारी इजाजत दे। इनके बावजूद जाति, धर्म और विचारधारा के आधार पर काम करने वाली कार्यपालिका से भी दुरुपयोग के खतरे हैं और हर हाल में लाभ कमाने वाले चोरों से भी।

परिजनों के साथ भी आचरण उत्तम रखें

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

हम छोटी-छोटी बातों को छोटा मानने की बड़ी भूल कर जाते हैं। दिनचर्या में कुछ काम ऐसे होते हैं, जिन्हें हम मशीन की तरह करते हैं और उन पर ध्यान नहीं देते। जैसे हमारा उठना, बैठना, भोजन करना, किसी से बात करना, अजनबी के साथ सफर करना, कार्यक्षेत्र में साथियों के साथ फुरसत का समय या जीवनसाथी के साथ बिताया जाने वाला एकांत। इन सब छोटी-छोटी बातों में ध्यान नहीं रहता कि हमारा आचरण कैसा होना चाहिए। हम आम काम की ही तरह ये सब भी करने लगते हैं। हमारे शास्त्रों में गृत्समद ऋषि का वर्णन आया है। वे कवि, वैज्ञानिक और गणितज्ञ होने के साथ बहुत अच्छे किसान भी थे और बुनकर भी कमाल के थे। कुल-मिलाकर बहुत हुनरमंद होकर कई क्षेत्रों में दक्ष थे। उन्होंने एक बहुत अच्छी पंक्ति लिखी है- प्रायेप्राये जिगीवांसः स्याम।' इसका मतलब है हमें हर एक व्यवहार में विजय होना है। यहां 'हर एक व्यवहार' शब्द पर ध्यान दीजिएगा। हर छोटे से छोटे काम में भी हमारी मुद्रा विजय की होनी चाहिए। विजय का अर्थ किसी को हराना नहीं है। वे कहना चाहते हैं हर काम, हर स्थिति में श्रेष्ठ होना। उदाहरण के लिए यदि आप परिवार के साथ डाइनिंग टेबल पर बैठे हैं तो काम छोटा-सा है भोजन करना परंतु यहां भी मुद्रा विजय की होनी चाहिए। जैसे हम किसी के घर जाते हैं या किसी को अपने घर बुलाते हैं तो बड़े सलीके से बातचीत व भोजन आदि का आग्रह करते हैं। ऐसा ही आचरण हर दिन अपने घर में भी होना चाहिए। हर सदस्य का ध्यान रखा जाए। बस, यहीं से आपमें अपनापन जागेगा, जो दूसरों के प्रति प्रेमपूर्ण बना देगा। इसका सबसे बड़ा फायदा होगा कि आप अचानक शांत होने लगेंगे। किसी भी क्रिया का आप पर दबाव नहीं आएगा।

क्यों अपराधी जीत जाते हैं, उदारवादी नहीं?

संदर्भ... चुनावों में आर्थिक उदारवाद और शासन में सुधार पर हावी पहचान आधारित राजनीति

गुरचरण दास
स्तंभकार और लेखक
gurcharandas@gmail.com

जब भी चुनाव आते हैं तो मैं यह सोचकर हताश हो जाता हूं कि हम सच्चे, स्वतंत्र और सुधार चाहने वाले उदार नागरिकों की बजाय फिर अपराधियों, लुभावने नारों वाले भ्रष्टों और राजनीतिक वंश के सदस्यों को चुन लेंगे। इस बार तमिलनाडु में शशिकला और अमेरिका में डोनाल्ड ट्रम्प की धक्कादायक जीत साफ-सुथरे उदारवादियों की नाकामी को रेखांकित करती है।

इस समस्या के समाधान के लिए मैंने एक बार आदर्श उदारवादी राजनीतिक दल की हिमायत की थी। 21वीं सदी में युवा, अपेक्षाओं से भरा भारत ऐसी धर्मनिरपेक्ष पार्टी का हकदार है, जो आर्थिक नतीजों के लिए अधिकारियों की बजाय बाजार पर भरोसा करने के साथ सरकारी संस्थानों में शासन सुधार पर अपना ध्यान केंद्रित करती हो। संभव है कि इसे जल्दी चुनावी सफलता न मिले लेकिन, यह शासन में सुधार का मुद्दा बहस के केंद्र में ले आएगी। यह धीरे-धीरे लोगों के सामने साबित कर देगी कि खुले बाजार और नियमों से संचालित सरकार ही जीवनस्तर ऊंचा उठाने और सबकी समृद्धि का एकमात्र समझदारी भरा रास्ता है।

इसी आधार पर मेरे मित्र संजीव सभलोक ने 2013 में विशुद्ध रूप से उदारवादी 'स्वर्ण भारत पार्टी' बनाई लेकिन, इसे अभी व्यापक समर्थन नहीं मिला है। मुझे अपराध बोध महसूस होता है कि मैंने इसके लिए पर्याप्त योगदान नहीं दिया और न मेरे उदारवादी मित्र इसमें शामिल हुए। जब मैं हमारी नाकामी पर विचार कर रहा था तो मैं चौंकाने वाले निष्कर्ष पर पहुंचा। मुझे अहसास हुआ कि उदारवादी सिद्धांतों पर आधारित पार्टी के जीतने के लगभग कोई अवसर नहीं है बशर्ते यह किसी 'पहचान' आधारित पार्टी से गठबंधन नहीं करती।

रियायती बिजली और भोजन के लोक-लुभावन वादे करने वाला प्रत्याशी हमेशा उस उदारवादी को हरा देगा, जो निजी उद्यम और स्पर्द्धा की वकालत करता है। चुनाव में खुले बाजार को मतदाताओं के गले उतारना कठिन है, क्योंकि बाजार का 'अदृश्य हाथ' उन्हें दिखाई नहीं देता, जबकि सरकार का दिखने वाला हाथ और भी प्रखरता से दिखाई देने लगता है। किंतु 'वामपंथी उदारवादी' के सफल होने की संभावना अधिक है, क्योंकि वह सरकार के हस्तक्षेप से व्यापक कल्याणकारी राज्य की हिमायत करता है। इसीलिए वाम-उदारवादी कांग्रेस चुनाव के दौरान रियायतें बांटने पर ध्यान केंद्रित कर दशकों तक अपनी सत्ता कायम रख पाई।

शास्त्रीय किस्म का उदारवाद आर्थिक स्वतंत्रता के वातावरण में हर किसी को ऊपर उठने का अवसर देता है। इस व्यवस्था में सरकार से ऐसा वातावरण उपलब्ध कराने की उम्मीद होती है, जिसमें कोई भी व्यक्ति खुले, पारदर्शी बाजार में शांतिपूर्वक अपने हितों की दिशा में बढ़ सके। इसके बाद 'अदृश्य हाथ' धीरे-धीरे चारों तरफ का जीवनस्तर ऊंचा उठाने में मदद करता है और लोगों को गरिमापूर्ण मध्यवर्गीय जिंदगी की ओर ले जाता है। 'अदृश्य हाथ' का यह जुमला एडम स्मिथ का है, जो शास्त्रीय उदारवाद के संस्थापकों में से थे। वे मानते थे कि मुक्त बाजार में हर व्यक्ति अपने हित का पीछा करता है तो 'अदृश्य हाथ' समाज के साझा हित को साकार करता है। चूंकि वोटर यह नहीं समझ पाता कि कैसे बिज़नेस चलाने में सरकार की बजाय बाजार अच्छा है, शास्त्रीय किस्म के उदारवादी सांस्कृतिक व सामाजिक पहचान वाली पार्टियों में शामिल हो गए। अमेरिका में वे 'लिबरल रिपब्लिकन' या 'कंज़र्वेटिव डेमोक्रेट' बन गए। किंतु उन्हें इसकी कीमत 'गर्भपात विरोधी' ईसाई एजेंडे तथा रिपब्लिकनों की गन लॉबी और डेमोक्रेटिक पार्टी के सख्त, अक्षम श्रम संगठन स्वीकार करने पड़े। ब्रिटेन में मार्गरेट थैचर को अपनी पार्टी (व देश) को बाजार के हित में लाने के लिए टोरी के 'परम्परागत अंग्रेजियत' के आदर्श स्वीकारने पड़े।

भारत में भी कई उदारवादी मोदी के 'विकास' एजेंडे का समर्थन करते हैं पर भाजपा की हिंदुत्ववादी सांस्कृतिकता से वास्ता नहीं रखते। 2014 के चुनाव में मोदी की चमत्कारी सफलता 'अधिकतम शासन, न्यूनतम सरकार' के उदारवादी आह्वान का ही नतीजा था, जिसने महत्वाकांक्षी युवाओं या कांग्रेस की लोक-लुभावन नीतियों से हताश लोगों को आकर्षित किया। इसका नतीजा यह हुआ कि उन्होंने भाजपा में आर्थिक उदारवादियों के लिए जगह बनाई और भाजपा परिपक्व होकर दक्षिणपंथी झुकाव वाली मध्यमार्गी पार्टी बन गई, जिसमें आर्थिक व सांस्कृतिक दक्षिणपंथ का स्पष्ट विभाजन था। हालांकि, मोदी मार्गरेट थैचर की तरह आर्थिक व सांस्थानिक सुधारों के लिए वैचारिक रूप से प्रतिबद्ध आदर्श उदारवादी नहीं हैं। वे व्यावहारिक आधार पर सुधार लाते हैं। अब भी यह कहना जल्दबाजी होगी कि मोदी 'विकास' के वादे को पूरा करेंगे या नहीं लेकिन, यदि वे अपने उदारवादी समर्थक कायम रखना चाहते हैं, तो उन्हें अपने दल की सांस्कृतिक शाखा को कड़े नियंत्रण में रखना होगा। लेकिन लोग चुनाव में आपराधिक रिकॉर्ड वाले व्यक्ति को क्यों चुनते हैं? 2014 में चुने गए सांसदों में से एक-तिहाई के खिलाफ आपराधिक प्रकरण चल रहे हैं और बीस फीसदी सांसदों पर तो हत्या व दुष्कर्म जैसे गंभीर आरोप लगे हैं। स्पष्ट है कि (543 में से) सौ से ज्यादा कानून निर्माताओं पर गंभीर आरोप दायर हैं। मिलन वैष्णव अपनी नई किताब 'व्हेन क्राइम पैज़' में लिखते हैं कि अपराधी चुनावों की आसमान छूती लागत उठाने और पार्टी कोष को भरने में बेहतर साबित होते हैं। मतदाता 'अपराधियों' को 'काम करा लेने' की काबिलियत के कारण चुनते हैं। कानून-व्यवस्था से संबंधित शिकायतें निपटाने में पुलिस की बजाय 'अपराधी' सांसद ज्यादा प्रतिसाद देते हैं।

मुझे दुख है कि किसी उदारवादी दल को न तो भारत में, न और कहीं भविष्य है। पिछली तीन सदियों तक उदारवाद ने ही न्यायोचित राजनीतिक आंदोलनों को संचालित किया है। 20वीं सदी में ज्यादातर राजनीतिक विमर्श इसी के हक में रहा। इसने भारत को औपनिवेशिक दासता से मुक्त कराया, साम्यवाद को धराशायी करने में इसी की भूमिका थी और भारत के आर्थिक सुधार भी इसी से संचालित हुए। किंतु उदारवादियों ने इन सुधारों का श्रेय नहीं लिया और इसीलिए हम चुपके से सुधार लाते रहे हैं। उदारवादी कोई संत नहीं है लेकिन, यह शर्म की बात है कि समृद्धि व शासन के पक्ष में तर्कपूर्ण दलीलों की बजाय मतदाताओं के लिए नस्ल, धर्म और जातिगत पहचान के आधार पर की गई भावनात्मक अपील का महत्व ज्यादा है। **(ये लेखक के अपने विचार हैं।)**

दो मुल्कों में शांति की गुहार लगाने पर इतना गुस्सा क्यों?

अंडर -30
करंट अफेयर्स पर 30 से कम उम्र के युवाओं की सोच

अंशुल त्रिवेदी, 27 वर्ष
पीएचडी स्कॉलर, जेएनयू, नई दिल्ली
Twitter@anshultrivedi47

दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्रा गुरमेहर कौर अपने सोशल मीडिया कैम्पेन के कारण सुर्खियों में आ गईं। गुरमेहर ने अप्रैल 2016 में एक वीडियो बनाया था। इसमें उन्होंने बताया कि कैसे करगिल युद्ध में शहीद हुए उनके पिता कैप्टन मनदीप सिंह की मौत का जिम्मेदार वे पाकिस्तान और मुस्लिमों को मानती रहीं। यहां तक कि इस नफरत के कारण उन्होंने 6 वर्ष की आयु में बुर्का पहनी एक महिला पर हमला भी कर दिया था। तब उनकी मां ने उन्हें समझाया कि उनके पिता की मौत के जिम्मेदार पाकिस्तान या मुस्लिम नहीं बल्कि युद्ध है।

किंतु फरवरी 2017 में अचानक सालभर पुराना वीडियो कैसे सुर्खियों में आ गया? जाने-माने लोग उनके खिलाफ ट्वीट करने लगे। भारतीय जनता पार्टी के एक सांसद ने शहीद की बेटी की तुलना दाऊद इब्राहिम से कर दी और गृहराज्य मंत्री रिजिजू भी इस मसले पर ट्वीट करने लगे! गुरमेहर ने तो केवल दो मुल्कों के बीच शांति की गुहार लगाई। तो उनके खिलाफ इतना गुस्सा क्यों? शायद इसलिए कि गुरमेहर ने हाल में हुई रामजस कॉलेज की हिंसा का विरोध किया, जिसमें छात्रों के साथ एक अध्यापक की हड्डियां तोड़ दी गई थीं। या फिर इसलिए कि उन्होंने सत्ता से बहुत कठिन सवाल पूछे और ये हुक्मरानों को हजम नहीं हुआ? कारण जो भी हो गुरमेहर का सवाल सही है- क्या दुश्मन सरकारें होती हैं या आम लोग? यदि लोग होते हैं तो कैसे विदेश में अप्रवासी भारतीय और पाकिस्तानी दोस्त बनकर रहते हैं? कैसे 1971 तक पूर्वी पाकिस्तान कहलाने वाला मुस्लिम बहुल देश आज हमारा मित्र राष्ट्र बंग्लादेश है? जंग और अमन दोनों सियासी फैसलों से तय होते हैं। सेना तो वही करती है जो तत्कालीन सरकार उसको आदेश देती है।

गुरमेहर बताती हैं कि उनका सपना ऐसी दुनिया में रहना है जहां कोई और गुरमेहर अपने पिता से बिछड़ने पर विवश न हो। ऐसे सपने देखने वाली युवा लड़कियों को यदि इंटरनेट पर दुष्कर्म की धमकियां मिल रही हैं तो एक समाज के रूप में हमें आत्ममंथन करने की आवश्यकता है।

नोंक-झोंक

वेब भास्कर

वाइल्ड लाइफ... तालाब में आराम फरमाते मगरमच्छ को भोजन का इंतजार

मध्य अमेरिकी देश अल साल्वाडोर के बर्लिन शहर में मगरमच्छ की यह फोटो मार्विन रेकिनो ने क्लिक की है। यह मगरमच्छ ओ्रनाडोर वाइल्ड लाइफ रेस्क्यू सेंटर के छोटे तालाब में आराम फरमा रहा है। यह वह रेस्क्यू सेंटर है, जहां लुप्तप्राय प्रजातियों के जीवों और शिकारियों का निशाना बने वन्यजीवों को लाकर संरक्षण दिया जाता है। या कोई घायल होता है, तो उसे उपचार से ठीक होने तक निगरानी में रखा जाता है। साल्वाडोरियन जियोथर्मिक एनर्जी कंपनी वन्यजीवों की रक्षा के लिए इस सेंटर को सहायता प्रदान करती है। जब वे पूरी तरह ठीक हो जाते हैं, तब उन्हें जंगल में सुरक्षित जगहों पर छोड़ दिया जाता है।

- ओ्रनाडोर वाइल्ड लाइफ रेस्क्यू सेंटर हाल ही में दुर्लभ प्रजाति के तोतों के बच्चों को तस्करी से बचाने के लिए चर्चा में आया था।

• theguardian.com

प्रेरणा... जॉब तलाशने वालों को मुफ्त में पहनाते हैं सूट

किसी अच्छी नौकरी के लिए इंटरव्यू देना जरूरी होता है और इंटरव्यू में औपचारिक ड्रेस को भी महत्व दिया जाता है। शायद इसीलिए अमेरिकी राज्य यूटा के साल्ट लेक शहर में वुलन मिल्स स्टोर अक्सर चर्चा में रहता है। 112 वर्ष पुराना यह स्टोर हर वर्ष एक परंपरा को पूरी शिद्दत से निभाता है। इस वर्ष स्टोर के मालिक ने बिल्कुल नया करने की सोची है। उन्होंने 'सूटेड फॉर गुड' कार्यक्रम शुरू किया है, जिसमें प्रत्येक सूट की बिक्री के साथ एक सूट ऐसे व्यक्ति को मुफ्त दिया जाता है, जिसे नौकरी की तलाश हो। सूट के साथ ही उसकी मैचिंग वाली टाई और शू भी दिए जाते हैं।

स्टोर के प्रेसीडेंट बीजे स्ट्रिन्चम कहते हैं- यहां हमारे लिए सूट मायने नहीं रखता, बल्कि उसे पहनने वाले मायने रखते हैं। यह उनमें खुशी का भाव लाने के लिए है, ताकि उन्हें खुद को साबित करने का अवसर मिले। फिर उससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं।

बीजे स्ट्रिन्चम ने कई लोगों को सूट प्रदान किया, लेकिन उदाहरण उन्होंने ट्रक ड्राइवर बोस का दिया। उसका सपना बिज़नेस वर्ल्ड में काम करने का था, लेकिन बिना सूट के उसे अच्छा जॉब तलाशने में मुश्किल हो रही थी। एक बार तो वह खुद का रिज्यूमे भी पूरा नहीं कर पा रहा था। उसने कहा, पहले मुझे निराशा ने घेर लिया था, लेकिन जब पहली बार सूट पहना, तो नया आत्मविश्वास आया। यह स्टोर अब तक 41 सूट बोस जैसे लोगों को पहना चुका है, 20 अन्य लोग रिज़र्व में हैं। इसके लिए केवल एक साधारण फॉर्म भरना होता है, जिसमें नौकरी की तलाश का उल्लेख और खुद के बारे में जानकारी देनी होती है।

• wild101fm.com

साइलेंट वॉर... जमीन ही नहीं, समुद्री सीमाओं पर भी हैं विवाद

अमेरिका के नए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प मैक्सिको सीमा पर ऊंची दीवार बनाना चाहते हैं, लेकिन उस पर होने वाला अरबों डॉलर का खर्च कौन उठाएगा, यह स्पष्ट नहीं है। ट्रम्प के कार्यकाल में इस दीवार का मुद्दा चर्चा में रहेगा। उधर, इजराइल-गाजा-फिलिस्तीन की सीमा और दक्षिण चीन सागर को लेकर चीन और आठ पूर्वी एशियाई देशों के साथ तनाव की स्थिति है। भारत-चीन, भारत-पाकिस्तान के सीमा विवाद भी दशकों से जारी हैं। चीन का ताइवान के साथ और यूक्रेन का रूस के साथ सीमा विवाद है। इनसे पता चलता है कि केवल जमीन ही नहीं, समुद्री सीमाओं को लेकर भी कई देशों में विवाद जारी है और कहीं-कहीं उनमें संघर्ष भी होता है।

हाल ही में यूरोपीय देश हंगरी ने बाल्कन देश सर्बिया से लगी सीमा पर नई फेन्सिंग लगाने की तैयारी कर दी है। उसका मानना है कि सर्बिया से बड़ी संख्या में शरणार्थी उसके यहां आ जाते हैं, लेकिन वह उन्हें रोकना चाहता है। सबसे अधिक शांत सीमा क्षेत्र की बात करें तो वह अमेरिका और कनाडा की सीमा है। सीमा क्षेत्र को लेकर विवाद की स्थिति राष्ट्रीय संसाधनों को लेकर होती है या फिर पूर्व में किए गए समझौतों पर असहमति से। जानिए सीमा विवादों को-

▪ सेनकाकू आइलैंड्स : जापान-चीन

जापान और चीन की सीमाओं के बीच इस आइलैंड समूह के चारों तरफ समुद्र है। फिलहाल उस पर जापान का नियंत्रण है, लेकिन चीन उसे अपना होने का दावा करता है। कहा जाता है कि उस आइलैंड में तेल और गैस के प्रचूर भंडार हैं। इसी आइलैंड के एक हिस्से को जापान के एक रईस परिवार ने जापान सरकार को बेच दिया था। उससे क्षेत्र के चीनी परिवारों में आक्रोश बढ़ गया और संघर्ष भी हुआ। विशेषज्ञों का मत है कि जिस तरह चीन अपना प्रभुत्व बढ़ाने के प्रयास कर रहा है, भविष्य में यह आइलैंड समूह बड़े संघर्ष का कारण बन सकता है।

▪ अंटार्कटिका : यूके-फ्रांस-अर्जेंटीना...

1960 के दशक से इस हिम महाद्वीप के हिस्सों पर नियंत्रण को लेकर यूके, फ्रांस और अर्जेंटिना समेत कई देशों के बीच दावे-प्रतिदावे की स्थिति रही है। वर्ष 1959 में अंटार्कटिका को लेकर संधि की गई थी। वह संधि किसी भी देश को अंटार्कटिका के हिस्से पर कब्जा करने से रोकती है। संधि में कहा गया है कि मानव जाति के कल्याण और शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए अंटार्कटिका के किसी भी क्षेत्र का उपयोग किया जा सकता है। इसी के साथ किसी को भी अंतरराष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन करने की इजाजत नहीं है।

▪ कुरिल द्वीपः जापान-रूस

56 द्वीप समूहों वाले इस क्षेत्र में कहीं-कहीं स्थानीय आबादी है और उनमें भी कुछ लोग खुद को जापान का तो कुछ रूस का मानते हैं। इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति ज्वालामुखी को लेकर भी संवेदनशील है। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद जापान और सोवियत रूस ने इसे लेकर कोई समझौता नहीं किया। परिणामस्वरूप सोवियत रूस ने कुरिल आइलैंड्स पर कब्जा कर लिया। कुछ हिस्से पर उसका पहले से नियंत्रण था। याल्टा समझौते के बाद सोवियत रूस ने उस पर अधिकार जताया, लेकिन जापान इतिहास का हवाला देकर उस पर दावा करता है।

▪ सहारा : मोरक्को-सहारावी

पश्चिमी सहारा के स्थानीय या मूल निवासी सहारावी कहलाते हैं। उनका संगठन पोलिसारियो फ्रंट 1970 के दशक से सक्रिय है और मोरक्को से स्वतंत्रता चाहता है। वर्ष 1991 में दोनों पक्ष संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में जनमतसंग्रह के लिए तैयार हुए, जिसमें सहारावियों को स्वतंत्रता या मोरक्को में जाने का फैसला करना था। मोरक्को ने हजारों सहारावियों को स्थानांतरित कर दिया, जिससे जनमतसंग्रह प्रभावित हुआ। उधर, पोलिसारियो फ्रंट ने फिर हथियार उठा लिए। दो दिन पहले भी संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने दोनों पक्षों से शांति की अपील की है।

▪ ताइवान : चीन

वर्ष 1894-1895 में जापान-चीन के युद्ध में चीन को हार मिली और ताइवान के साथ दो अन्य द्वीप जापानी शासक के नियंत्रण में चले गए। दूसरे विश्वयुद्ध में जापान की हार के बाद ताइवान पुनः चीनी नियंत्रण में आ गया। वर्ष 1949 में ताइवान अस्तित्व में आया। ताइवान को आधिकारिक नाम 'रिपब्लिक ऑफ चाइना' मिला, जबकि चीन को पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना कहा गया। लंबे समय तक चीन ताइवान पर दावा जताता रहा। वर्ष 2005 में उसने खुद को स्वतंत्र घोषित किया। इसके बावजूद दोनों देशों में तकरार होती रहती है। • britannica.com

नॉलेज भास्कर

सेहत... रूमेटिक फीवर और हार्ट

अगर किसी को बिना सर्दी के गले में खराश और 101 डिग्री बुखार है, तो तत्काल डॉक्टर से संपर्क करें। यह रूमेटिक फीवर हो सकता है। यदि समय पर इसे नहीं रोका तो यह आपके हार्ट के वॉल्व को नुकसान पहुंचा सकता है। आप जीवन भर इस बीमारी से घिरे रह सकते हैं और लापरवाही मौत का कारण भी बन सकती है।

डॉ. अनिल किशन वेद
सीनियर कार्डियक सर्जन,
सरोज सुपर स्पेशलिटी
हॉस्पिटल, नई दिल्ली

रूमेटिक फीवर गले के संक्रमण से जुड़ी एक समस्या है जो 5-15 वर्ष के बच्चों को सबसे अधिक प्रभावित करती है। युवाओं में भी यह हो सकती है पर वयस्कों में यह बहुत कम होती है। यह एक गंभीर समस्या है जिसका उपचार संभव है लेकिन, अगर समय रहते उपचार नहीं किया जाये तो इससे स्ट्रोक की आशंका बढ़ जाती है। हृदय को स्थायी रूप से नुकसान पहुंचता है जिससे मृत्यु हो सकती है।

क्या है : रूमेटिक फीवर स्ट्रेप्टोकोकस बैक्टीरिया के द्वारा होता है। इस बैक्टीरिया के द्वारा जब गले का संक्रमण या स्कारलेट फीवर होता है, तब रूमेटिक फीवर होने की आशंका अत्यधिक होती है। वैसे स्कारलेट फीवर कम ही होता है। जब इस बैक्टीरिया के कारण त्वचा या दूसरे भागों का संक्रमण होता है, तब रूमेटिक फीवर बहुत ही कम ट्रिगर होता है। माना जाता है कि इसके संक्रमण से इम्यून तंत्र गड़बड़ा जाता है और वह अपने ही उतकों पर आक्रमण करने लगता है, विशेषकर हृदय, जोड़ों और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र पर। रूमेटिक फीवर हृदय, जोड़ों, त्वचा और मस्तिष्क को प्रभावित करता है।

रूमेटिक हार्ट डिसीज : गंभीर रूमेटिक फीवर के कारण कई लोगों के हृदय की मांसपेशियां और वॉल्व क्षतिग्रस्त हो जाते हैं जिसे रूमेटिक हार्ट डिसीज कहा जाता है।

हार्ट वॉल्व वन वे डोर के रूप में कार्य करते हैं। ये इस बात को सुनिश्चित करते हैं कि जो रक्त हृदय से पम्प किया जाता है उसका प्रवाह केवल एक ही दिशा में हो। जब वॉल्व क्षतिग्रस्त हो जाते हैं तब इनसे रक्त लीक हो सकता है या इसका प्रवाह गलत दिशा में हो सकता है। रूमेटिक फीवर के कारण हमेशा हृदय क्षतिग्रस्त हो ऐसा जरूरी नहीं है, लेकिन अगर रूमेटिक फीवर का समय पर उपचार नहीं कराया जाए या वह गंभीर हो जाए तो इससे हृदय के क्षतिग्रस्त होने की आशंका बढ़ जाती है। आंकड़ों की मानें तो गंभीर रूमेटाइट फीवर के 60 प्रतिशत मामलों में हार्ट वॉल्व क्षतिग्रस्त हो जाता है जो रूमेटाइट हार्ट डिसीज का एक प्रमुख लक्षण है।

एक बार रूमैटिक फीवर के लक्षण दिखाई देने पर ये कई महीनों तक रहते हैं। इसके कारण लंबे समय तक रहने वाली जटिलताएं हो सकती हैं। इनमें से सबसे प्रमुख है रूमैटिक हार्ट डिसीज। इसके अलावा हृदय से जुड़ी कुछ और जटिलताएं भी हो सकती हैं, जैसे-

वॉल्व स्टेनोसिसः वॉल्व का संकरा हो जाना।

वॉल्व रीगर्गीटेशनः इसमें वॉल्व से लीकेज होता है, जिसके कारण रक्त का गलत दिशा में प्रवाह होने लगता है।

मांसपेशियों का क्षतिग्रस्त होनाः सूजन के कारण हृदय की मांसपेशियां कमजोर हो जाती हैं, जिसके कारण प्रभावकारी तरीके से रक्त पंप करने की हृदय की क्षमता कम हो जाती है।

- धड़कनों का अनियमित हो जाना।
- हार्ट फेलियर।

इसका कारणः इसका सबसे प्रमुख कारण गले का संक्रमण और स्कारलेट फीवर है। इससे शरीर में सूजन आ जाती है जो रूमेटिक फीवर के सभी लक्षणों का आधार है। यह विशेषकर बच्चों और किशोरों को ही प्रभावित करता है क्योंकि उनका इम्यून तंत्र कमजोर होता है।

रिस्क फैक्टरः फैमिली हिस्ट्री, कुछ निश्चित जीन्स रूमेटिक हार्ट डिसीज होने की आशंका बढ़ा देते हैं।

पर्यावरण संबंधी कारणः साफ-सफाई न रखना, पीने के साफ पानी की अनुपलब्धता और भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर रहना।

लक्षण : इसके लक्षण अलग-अलग दिखाई देते हैं। गले की खराश होने के दो से चार सप्ताह में कुछ लक्षण दिखाई देते हैं जैसे-गले में खराश, लिम्फेनोड का फूल जाना, नाक से गाढ़ा और रक्त वाला डिस्चार्ज बाहर आना जोड़ों में दर्द होना और सूजन आ जाना, छाती और पेट में दर्द होना, सांस फूलना, फोकस करने की क्षमता प्रभावित होना, त्वचा पर रैशेज पड़ जाना, शरीर का समन्वय बनाए रखने में समस्या आना। सावधानियां

अगर कोई रूमैटाइड फीवर से पीड़ित है तो उसे अपने दांतों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए क्योंकि मुंह में उपस्थित छोटे-छोटे कीटाणु रक्त में पहुंच जाते हैं। रक्त इन कीटाणुओं को हृदय तक ले जाता है जहां पहुंचकर ये हृदय के वॉल्वों को और अधिक क्षतिग्रस्त कर देते हैं इसे इन्फेक्टिव एंडोकार्डिटिस कहते हैं। जो बच्चे रूमेटिक फीवर से पीड़ित हैं उनके माता-पिता को चाहिए कि बच्चों के दांतों का ध्यान रखें ताकि उन्हें संक्रमण से बचाया जा सके। कोई ऐसी दवाई नहीं है जिससे इसका तुरंत उपचार हो।

फैक्ट » एंटीबॉयोटिक इसका सबसे प्रभावी उपाय माना जाता है। यह दोबारा न हो इसलिए इसका उपचार पूरी तरह किया जाता है, जो लगभग पांच वर्ष तक चल सकता है।